



1. कृषि-प्रसंस्करण इकाई

(जैसे- टमाटर सॉस, अचार, जूस, आटा मिल आदि)



2. कोल्ड स्टोरेज / शीत शृंखला

(फल, सब्जी, दूध आदि का सुरक्षित भंडारण)



3. पैकेजिंग एवं लेबलिंग

(उत्पाद को आकर्षक और सुरक्षित बनाना)



4. परिवहन एवं लॉजिस्टिक्स

(उत्पाद को बाजार तक पहुँचाना)



5. गोदाम एवं भंडारण

(अनाज, दाल, तिलहन का दीर्घकालिक भंडारण)



6. विपणन एवं बिक्री

(खुदरा, थोक, ऑनलाइन और निर्यात)

मूल्य शृंखला और गौण उद्यम से भरपूर अवसर

सर्वेश कुमार

कृषि क्षेत्र में किसानों की आय वृद्धि तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था के सुदृढीकरण के लिए कृषि मूल्य शृंखला एवं द्वितीयक (गौण) उद्यमों का विकास अत्यंत महत्वपूर्ण है। कृषि मूल्य शृंखला उत्पादन से लेकर प्रसंस्करण, भंडारण, परिवहन, विपणन और उपभोग तक की परस्पर जुड़ी गतिविधियों का एक समन्वित तंत्र है, जिसमें प्रत्येक चरण पर उत्पाद का मूल्य संवर्धन होता है। इस प्रक्रिया से कृषि उत्पादों की गुणवत्ता, उपयोगिता एवं बाजार प्रतिस्पर्धा में वृद्धि होती है। द्वितीयक उद्यम जैसे कृषि प्रसंस्करण इकाइयाँ, कोल्ड स्टोरेज, पैकेजिंग, लॉजिस्टिक्स एवं विपणन सेवाएं उत्पादों के प्रभावी प्रबंधन और मूल्य संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इनके विस्तार से फसल कटाई के बाद होने वाली हानि कम होती है, उत्पादों को बेहतर बाजार मिलता है तथा ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार एवं उद्यमिता के नए अवसर सृजित होते हैं।

कृषि मूल्य शृंखला का सुदृढीकरण एवं द्वितीयक उद्यमों का विकास न केवल किसानों की आय बढ़ाने में सहायक है, बल्कि समावेशी एवं सतत ग्रामीण विकास की दिशा में भी महत्वपूर्ण कदम है।

मूल्य संवर्धन

प्रसंस्करण क्रियाओं द्वारा किसी कच्चे उत्पाद या कृषि वस्तु के मूल स्वरूप को इस प्रकार बदलना या सुधारना कि उसकी आर्थिक कीमत बढ़ जाए, उसे मूल्य संवर्धन कहा जाता है। इससे उत्पाद की गुणवत्ता, उपयोगिता एवं बाजार में मांग बढ़ती है, जिससे किसानों एवं अन्य हितधारकों को अधिक लाभ प्राप्त होता है। कृषि क्षेत्र में मूल्य संवर्धन के कई प्रभावी उपाय हैं, जो उत्पाद की गुणवत्ता और बाजार मूल्य बढ़ाने में सहायक होते हैं।

असिस्टेंट प्रोफेसर, कृषि अर्थशास्त्र विभाग, श्री दुर्गा जी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, आजमगढ़ (उत्तर प्रदेश)

सबसे पहला उपाय है प्रसंस्करण, हैं। इससे उत्पाद की शुद्धता एवं टिकाऊपन जिसमें उत्पाद की सफाई, छंटाई, पकाना, बढ़ता है। दूसरा महत्वपूर्ण उपाय है ग्रेडिंग, जिसके अंतर्गत उत्पाद को उसकी गुणवत्ता के

सारणी 1. मूल्य शृंखला की प्रमुख गतिविधियाँ

गतिविधि	कार्य	उदाहरण
कारक आपूर्ति	बीज, उर्वरक, उपकरण आदि की उपलब्धता सुनिश्चित करना	बीज कंपनियाँ, उर्वरक विक्रेता, कृषि यंत्र आपूर्तिकर्ता
उत्पादन	फसलों की बुआई, सिंचाई, देखभाल एवं कटाई जैसे कार्य	बुआई, रोपाई, सिंचाई, पोषण प्रबंधन, रोग नियंत्रण, कटाई, पशुपालन
प्रसंस्करण	उत्पाद को उपभोग योग्य रूप में परिवर्तित करना	आटा चक्की, दुग्ध पाश्चुरीकरण इकाइयाँ, मांस प्रसंस्करण इकाइयाँ
भंडारण	कृषि उत्पाद को सुरक्षित एवं संरक्षित रखना	कोल्ड स्टोरेज, गोदाम, वेयरहाउस
परिवहन/लॉजिस्टिक्स	उत्पाद को बाजार या उपभोक्ता तक पहुँचाना	ट्रक, रेल, टेम्पो, कोल्ड चेन
विपणन एवं बिक्री	उत्पाद को बाजार में बेचने एवं उपभोक्ता तक पहुँचाने की प्रक्रिया	मंडी, सुपरमार्केट, निर्यात चैनल
उपभोग	अंतिम उपभोक्ता द्वारा उत्पाद का उपयोग	घरेलू उपयोग, होटल, संस्थान

कृषि मूल्य शृंखलाओं के प्रमुख खंड एवं संबंधित हितधारक

कृषि मूल्य शृंखला एक बहुस्तरीय एवं समन्वित प्रक्रिया है, जो कारक आपूर्ति से लेकर अंतिम उपभोक्ता तक कृषि उत्पाद की यात्रा को विभिन्न चरणों में जोड़ती है। इस शृंखला में कई प्रकार के हितधारक शामिल होते हैं, जो उत्पादन, प्रसंस्करण, भंडारण, परिवहन एवं विपणन के प्रत्येक स्तर पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारत जैसे विविध कृषि संरचना वाले देश में इन सभी खंडों एवं इनसे जुड़े हितधारकों का महत्व और भी बढ़ जाता है। बीज एवं उर्वरक आपूर्तिकर्ता, किसान, कृषि विस्तार सेवाएं, प्रसंस्करण इकाइयां, भंडारण एवं लॉजिस्टिक्स प्रदाता, व्यापारी, खुदरा विक्रेता तथा उपभोक्ता सभी मिलकर इस शृंखला को सुदृढ़ बनाते हैं। प्रत्येक हितधारक अपने स्तर पर उत्पाद की गुणवत्ता, मूल्य संवर्धन तथा बाजार तक पहुंच सुनिश्चित करता है। इनके बीच समन्वय एवं सहयोग जितना बेहतर होता है, कृषि मूल्य शृंखला उतनी ही प्रभावी, लाभकारी एवं टिकाऊ बनती है।



कच्चे कृषि उत्पाद को प्रसंस्करण पैकेजिंग और ब्रांडिंग के माध्यम से अधिक मूल्यवान बनाना

आधार पर वर्गीकृत किया जाता है, जिससे उपभोक्ताओं को बेहतर विकल्प मिलते हैं और किसानों को उचित मूल्य प्राप्त होता है।

इसके बाद पैकेजिंग का महत्व आता है, जो न केवल उत्पाद को सुरक्षित रखती है, बल्कि उसकी आकर्षक प्रस्तुति के माध्यम से

बिक्री बढ़ाने में भी सहायक होती है। उचित सामग्री एवं डिजाइन का उपयोग उत्पाद को नुकसान से बचाने के साथ-साथ उपभोक्ताओं का ध्यान आकर्षित करता है।

भंडारण भी मूल्य संवर्धन का एक महत्वपूर्ण अंग है, जिसमें उत्पाद को उपयुक्त तापमान एवं नमी स्तर पर सुरक्षित रखा जाता है, ताकि वह लंबे समय तक ताजा एवं उपयोग योग्य बना रहे। इसके साथ ही ब्रांडिंग उत्पाद की पहचान बनाने और बाजार में एक विशिष्ट छवि स्थापित करने में सहायक होती है, जिससे उपभोक्ताओं का विश्वास बढ़ता है और मांग में वृद्धि होती है।

अंततः लॉजिस्टिक्स का महत्वपूर्ण स्थान है, जिसके माध्यम से उत्पाद को सही समय पर और उचित स्थिति में बाजार या उपभोक्ता तक पहुंचाया जाता है। यह पूरी प्रक्रिया मूल्य संवर्धन को प्रभावी बनाती है। इससे उत्पाद की बाजार तक पहुंच और बिक्री सुनिश्चित होती है।

इस प्रकार, ये सभी उपाय मिलकर कृषि उत्पादों की गुणवत्ता, टिकाऊपन और बाजार मूल्य में वृद्धि करते हैं, जिससे किसानों, उत्पादकों एवं अन्य संबंधित पक्षों को अधिक लाभ प्राप्त होता है।

मूल्य शृंखला

मूल्य शृंखला व्यवसाय प्रक्रिया की एक महत्वपूर्ण अवधारणा है, जो किसी उत्पाद या सेवा के निर्माण में शामिल सभी गतिविधियों की शृंखला का वर्णन करती है। यह कच्चे उत्पाद से लेकर अंतिम उत्पाद या सेवा के

द्वितीयक उद्यमों की प्रमुख गतिविधियां

- **प्रसंस्करण:** कृषि उत्पादों को उपभोक्ता के लिए उपयुक्त बनाने हेतु विभिन्न तकनीकी प्रक्रियाओं से गुजरना प्रसंस्करण कहलाता है। इसमें सफाई, छंटाई, ग्रेडिंग, कटाई, पाश्चुरीकरण, सुखाना, पकाना तथा गुणवत्ता नियंत्रण जैसी प्रक्रियाएं शामिल होती हैं, जिससे उत्पाद की गुणवत्ता और उपयोगिता बढ़ती है।
- **भंडारण:** कृषि उत्पादों को उचित तापमान, आर्द्रता एवं अन्य अनुकूल परिस्थितियों में सुरक्षित रखना भंडारण का मुख्य उद्देश्य है। इससे उत्पाद खराब होने से बचता है, कटाई उपरांत हानि कम होती है और आपूर्ति में निरंतरता बनी रहती है। कोल्ड स्टोरेज एवं गोदाम इसके प्रमुख उदाहरण हैं।
- **पैकेजिंग:** इस शृंखला के के माध्यम से कृषि उत्पादों को सुरक्षित, आकर्षक एवं परिवहन के अनुकूल बनाया जाता है। यह उत्पाद की गुणवत्ता एवं ताजगी बनाए रखने के साथ-साथ उपभोक्ता को आवश्यक जानकारी प्रदान करती है। आधुनिक तकनीकों में बायोडिग्रेडेबल, स्मार्ट एवं वैक्यूम पैकेजिंग का उपयोग बढ़ रहा है।
- **परिवहन एवं लॉजिस्टिक्स:** कृषि उत्पादों को खेत से बाजार, प्रसंस्करण इकाइयों, भंडारण स्थलों एवं उपभोक्ताओं तक पहुंचाने की प्रणाली को परिवहन एवं लॉजिस्टिक्स कहा जाता है। इसमें सड़क, रेल, जलमार्ग एवं वायु परिवहन शामिल होते हैं। प्रभावी लॉजिस्टिक्स से उत्पाद की गुणवत्ता सुरक्षित रहती है और लागत में कमी आती है।
- **विपणन एवं बिक्री:** इसके अंतर्गत उत्पाद को उपभोक्ता तक पहुंचाने की पूरी प्रक्रिया आती है, जिसमें ब्रांडिंग, मूल्य निर्धारण, वितरण चैनल प्रबंधन, विज्ञापन एवं ग्राहक सेवा शामिल हैं। आधुनिक समय में डिजिटल प्लेटफॉर्म, ई-कॉमर्स एवं मोबाइल आधारित विपणन का महत्व तेजी से बढ़ रहा है।

इस प्रकार, द्वितीयक उद्यम कृषि उत्पादों के मूल्य संवर्धन, गुणवत्ता सुधार एवं बाजार विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिससे किसानों की आय में वृद्धि और ग्रामीण विकास को नई गति मिलती है।

उपभोक्ता तक पहुंचने की पूरी प्रक्रिया पर केंद्रित होती है।

कृषि मूल्य शृंखला

कृषि मूल्य शृंखला में उत्पादन से लेकर प्रसंस्करण, विपणन और उपभोग तक की सभी मूल्यवर्धित गतिविधियां शामिल होती हैं। इस शृंखला के प्रत्येक चरण में अग्र एवं पश्च लिंकेज होते हैं, जो विभिन्न घटकों को आपस में जोड़ते हैं।

इस संदर्भ में मूल्य शृंखला को उन गतिविधियों की शृंखला के रूप में समझा जाता है, जिनके माध्यम से उत्पादन से उपभोग तक उत्पाद का मूल्य लगातार बढ़ता जाता है। कृषि में यह उन सभी कार्यकर्ताओं और प्रक्रियाओं का समन्वित समूह है, जो किसी उत्पाद को खेत से उपभोक्ता तक पहुंचाते हैं, जहां प्रत्येक स्तर पर मूल्य संवर्धन होता है।

कृषि मूल्य शृंखला में बीज, उर्वरक एवं अन्य आदानों की आपूर्ति जैसी गतिविधियां, जो उत्पादन इकाई की ओर होती हैं, ‘बैक एंड’ या ‘अपस्ट्रीम’ गतिविधियां कहलाती हैं। वहीं प्रसंस्करण, भंडारण, लॉजिस्टिक्स, थोक एवं



मजबूत बैकवर्ड और फॉरवर्ड लिंकेज से कृषि मूल्य शृंखला सुदृढ़ होती है और किसान की आय व उपभोक्ता संतुष्टि बढ़ती है

खुदरा विपणन जैसी गतिविधियां, जो उपभोक्ता तक पहुंचाने से संबंधित हैं, ‘फ्रंट एंड’ या ‘डाउन स्ट्रीम’ गतिविधियां कही जाती हैं। संस्थागत व्यवस्थाएं जैसे अनुबंध खेती

एवं उत्पादक संगठनों के माध्यम से इन ‘बैक एंड’ एवं ‘फ्रंट एंड’ गतिविधियों का समेकन किया जाता है, जिससे व्यवसाय का विस्तार होता है और किसानों को बेहतर बाजार एवं मूल्य प्राप्त करने में सहायता मिलती है।

संरचना

कृषि मूल्य शृंखला को मुख्यतः दो भागों में विभाजित किया जा सकता है: प्राथमिक गतिविधियां और सहायक गतिविधियां।

प्राथमिक गतिविधियां

वे आर्थिक क्रियाएं हैं, जो प्राकृतिक संसाधनों के प्रत्यक्ष उपयोग से संबंधित होती हैं। ये किसी भी अर्थव्यवस्था का आधार मानी जाती हैं, क्योंकि इनके माध्यम से कच्चे माल का उत्पादन या निष्कर्षण किया जाता है।

कृषि संदर्भ में इन गतिविधियों में फसल उत्पादन, पशुपालन, मत्स्य पालन, वानिकी तथा खनन आदि शामिल हैं। इनसे प्राप्त कच्चे उत्पाद आगे प्रसंस्करण एवं विपणन के माध्यम से द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रों में उपयोग किए जाते हैं, जहां उनका मूल्य संवर्धन होता है।

सहायक गतिविधियां

वे क्रियाएं जो प्राथमिक गतिविधियों को प्रभावी एवं सुचारु रूप से संचालित करने में सहयोग प्रदान करती हैं। ये प्रत्यक्ष रूप से उत्पादन से जुड़ी नहीं होतीं, किन्तु संपूर्ण मूल्य शृंखला की दक्षता, गुणवत्ता एवं प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

कृषि मूल्य शृंखला में सहायक गतिविधियों के अंतर्गत अनुसंधान एवं विकास, तकनीकी सहयोग, वित्तीय सेवाएं, मानव संसाधन प्रबंधन, आधारभूत संरचना तथा सूचना एवं संचार

सारणी 2. कृषि में सहायक गतिविधियों का विवरण

सहायक गतिविधि	विवरण	उदाहरण
बुनियादी ढांचा	सड़कें, बिजली, सिंचाई आदि जैसी आधारभूत सुविधाएं	ग्रामीण सड़कें, नहरें, बिजली आपूर्ति
तकनीकी विकास एवं अनुसंधान	कृषि तकनीक, नवाचार एवं सुधार	हाइब्रिड बीज, ड्रोन, मृदा जांच
मानव संसाधन विकास	किसानों एवं कर्मियों का प्रशिक्षण एवं क्षमता निर्माण	कृषि विस्तार सेवाएं, प्रशिक्षण कार्यक्रम, कार्यशालाएं
वित्त एवं निवेश	कृषि कार्यों हेतु पूंजी, ऋण एवं वित्तीय सहायता	कृषि ऋण, बीमा, सहकारी बैंक
नीति एवं शासन	कृषि से संबंधित सरकारी नीतियां एवं नियम	न्यूनतम समर्थन मूल्य, सरकारी योजनाएं, नियामक प्रावधान
खरीद/प्रोक्योरमेंट	संसाधनों एवं उत्पादों की खरीद प्रक्रिया	अनुबंध खेती, थोक खरीद, आपूर्ति प्रबंधन

सारणी 3. कृषि मूल्य शृंखलाओं के प्रमुख खंड एवं संबंधित हितधारक

मूल्य शृंखला खंड	हितधारक
कारक आपूर्तिकर्ता	बीज कंपनियां, उर्वरक कंपनियां, कृषि रसायन कंपनियां, कृषि यंत्र आपूर्तिकर्ता, खुदरा इनपुट विक्रेता
उत्पादक (किसान)	लघु एवं सीमांत किसान, मध्यम एवं बड़े किसान, किसान उत्पादक संगठन (FPO), सहकारी संस्थाएं
मध्यस्थ/एकत्रकर्ता	ग्राम स्तरीय व्यापारी, मंडियां (APMC), कमीशन एजेंट, एग्रीगेटर कंपनियां
प्रसंस्करणकर्ता एवं मूल्य संवर्धक	कृषि प्रसंस्करण कंपनियां, खाद्य उत्पादक कंपनियां, डेयरी प्रोसेसर, चावल/गेहूं मिल संचालक
वितरक, खुदरा विक्रेता एवं उपभोक्ता	खुदरा शृंखला, ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म, निर्यातक, अंतिम उपभोक्ता
सहायक संस्थाएं	सरकारी निकाय, वित्तीय संस्थान, अनुसंधान संस्थान, कृषि-प्रौद्योगिकी प्रदाता, एनजीओ एवं विकास संगठन

प्रणाली शामिल होती हैं। इन गतिविधियों के माध्यम से उत्पादन प्रक्रिया अधिक संगठित, कुशल एवं लाभकारी बनती है, जिससे संपूर्ण कृषि तंत्र को मजबूती मिलती है।

कृषि क्षेत्र में द्वितीयक (गौण) उद्यम

द्वितीयक (गौण) उद्यम वे विनिर्माण एवं सेवा आधारित गतिविधियां हैं, जो कृषि उत्पाद के प्राथमिक उत्पादन के बाद मूल्य संवर्धन, प्रसंस्करण, भंडारण, परिवहन एवं विपणन से जुड़ी होती हैं। ये उद्यम कृषि मूल्य शृंखला की समग्र दक्षता एवं उत्पादकता को बढ़ाते हैं। साथ ही कृषि उपज की गुणवत्ता, बाजार तक पहुंच और आर्थिक मूल्य में वृद्धि करते हैं। परिणामस्वरूप, ये किसानों की आय बढ़ाने और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

द्वितीयक उद्यमों का महत्व एवं प्रभाव

- **मूल्य संवर्धन एवं उत्पाद गुणवत्ता में वृद्धि:** द्वितीयक उद्यम कृषि उपज के भौतिक एवं गुणात्मक परिवर्तन के माध्यम से उत्पाद की उपभोक्ता मांग और बाजार मूल्य को बढ़ाते हैं, जिससे किसानों को अधिक लाभ प्राप्त होता है।
- **फसल कटाई उपरांत बेहतर प्रबंधन:** आधुनिक भंडारण एवं प्रसंस्करण

सारणी 4. द्वितीयक उद्यमों के प्रकार एवं कार्यात्मक भूमिका

उद्यम का प्रकार	कार्यात्मक भूमिका	उदाहरण
कृषि-प्रसंस्करण इकाइयां	कृषि उत्पादों की सफाई वर्गीकरण, प्रसंस्करण एवं पैकेजिंग के माध्यम से मूल्य संवर्धन	अमूल, आईटीसी
कोल्ड स्टोरेज एवं शीत शृंखला	नियंत्रित तापमान एवं आर्द्रता में फल, सब्जी एवं दुग्ध उत्पादों का संरक्षण	स्नोमैन लॉजिस्टिक्स, देहात
गोदाम एवं भंडारण सुविधाएं	कृषि उपज के सुरक्षित एवं दीर्घकालिक भंडारण की व्यवस्था	सरकारी एवं निजी गोदाम
लॉजिस्टिक्स एवं परिवहन सेवाएं	उत्पादों को उत्पादन स्थल से बाजार एवं उपभोक्ता तक पहुंचाने की प्रणाली	निंजाकार्ट, समुन्नति
कारक आपूर्ति एवं रिटेलर	बीज, उर्वरक, कीटनाशक एवं कृषि यंत्रों की आपूर्ति एवं विक्रय	स्थानीय कृषि डीलर, कृषि सेवा केंद्र
विपणन एवं निर्यात कंपनियां	ब्रांड निर्माण, विपणन, मूल्य निर्धारण एवं निर्यात प्रबंधन	एपीडा, निर्यात हाउस

तकनीकों के उपयोग से उपज के खराब होने की आशंका कम होती है, जिससे खाद्य सुरक्षा सुदृढ़ होती है।

- **ग्रामीण आर्थिक सशक्तिकरण एवं रोजगार सृजन:** ये उद्यम ग्रामीण क्षेत्रों में स्वरोजगार एवं औद्योगिक रोजगार के अवसर प्रदान करते हैं, जिससे सामाजिक एवं आर्थिक विकास को बल मिलता है।

किसान और बाजार के बीच समन्वय:

द्वितीयक उद्यम किसानों को बेहतर विपणन चैनल एवं उचित मूल्य उपलब्ध करवाते हैं, जिससे उनकी आय में स्थिरता एवं वृद्धि होती है।

● **खाद्य आपूर्ति शृंखला की विश्वसनीयता:** ये उद्यम खाद्य सामग्री की सतत, गुणवत्तापूर्ण एवं समयबद्ध उपलब्धता सुनिश्चित करते हैं, जो राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा के लिए अत्यंत आवश्यक है।

भाकृअनुप की द्विमासिक बागवानी पत्रिका 'फल फूल' मई-जून, 2026 अंक के प्रमुख आकर्षण

- ◆ हरी पत्तेदार सब्जियों के फायदे अनेक
- ◆ पुष्प उत्पादन में जीनोम संपादन
- ◆ सब्जियों की पौधशाला का प्रबंधन
- ◆ पर्वतीय क्षेत्रों में पॉलीहाउस में टमाटर की खेती
- ◆ मूल्यवर्धित आंवला का टिकाऊ उत्पादन
- ◆ मशरूम से भरपूर पोषण
- ◆ गुणों से भरपूर माइक्रोबीनस का उत्पादन
- ◆ पंचकुट्टा-थार मरुस्थल की पारंपरिक खाद्य प्रणाली
- ◆ देसी फलों का महत्व एवं संरक्षण
- ◆ जीरे की उन्नत बीज उत्पादन तकनीक
- ◆ शुष्क क्षेत्रों हेतु बेहद उपयोगी कैर
- ◆ पुष्पोत्पादन पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव
- ◆ स्वास्थ्य पौध उत्पादन हेतु सनकन नर्सरी
- ◆ आम में अनियमित फलन की चुनौती का प्रबंधन
- ◆ सब्जियों की संरक्षित खेती हेतु पॉलीहाउस तकनीक
- ◆ मई-जून के बागवानी कार्य

संपर्क सूत्र: प्रभारी, व्यवसाय एकक, भाकृअनुप-कृषि ज्ञान प्रबंध निदेशालय, कैब-1, पूसा गेट, नई दिल्ली-110012

दूरभाष: 25843657, www.icar.org.in